BUSINESS ADVISORY COMMITTEE

FIFTY-FIRST REPORT

THE MINISTER OF WORKS AND HOUSING AND PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI K. RAGHU RAMAIAH): Sir, I beg to move:

"That this House do agree with the Fifty-first Report of the Business Advisory Committee presented to the House on the 20th February, 1975."

MR SPEAKER: The question is:

"That this House do agree with the Fifty-first Report of the Business Advisory Committee presented to the House on the 20th February, 1975."

The motion was adopted

श्री हुकम चन्द कछवाय : (मुरेना) : अध्यक्ष महोदय, आइटम नम्बर 6 पर जो शेख अब्दुल्ला के कार्यक्रम की बात है, उसके बारे में मन्त्री महोदय जवाब देते तो अच्छा रहता ।

SHRI K RAGHU RAMAIAH: I shall certainly convey to the Ministers concerned whatever has been so earnestly pleaded by each hon. member.

MR. SPEAKER: They expect you to speak for one hour.

SHRI K. RAGHU RAMAIAH: I think they are quite satisfied with my brief and sweet statement.

श्री हुकम चन्द कछवाय : शेख अबदुल्ला के लगातार स्टेटमेंट आ रहे हैं कि मै विधान सभा का भंग कराके चुनाव कराऊंगा, केन्द्र के किसी भी कानून का पालन नहीं करूंगा । इस प्रकार के स्टेटमेंटों से वहा फिर साम्प्रदायिक दंगे होंगे ।

MR. SPEAKER: We adjourn now for Lunch to reasonable at 2.45 P.M.

13.45 hrs.

The Lok Sabha adjourned for Lunch till forty-five minutes past Fourteen of the clock.

The Lok Sabha re-assembled after Lunch at forty-eight minutes past Fourteen of the Clock.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS

श्री रुद्र प्रताप सिंह (बाराबंकी) : उपाध्यक्ष महोदय सम्मानित सदन को ज्ञात है कि मध्यावधि निर्वाचन एक ऐतिहासिक और निर्णायक निर्वाचन था जिस में भारत की महान जनता ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व और कांग्रेस दल की नीतियों को, उस के आदर्शों को, मूल्यों को और कांग्रेस दल के कार्यक्रमों को स्वीकार किया था और उस के पश्चात कांग्रेस को भारी बहुमत प्रदान किया था ।

मान्यवर, उस निर्वाचन के द्वारा भारत की जनता ने अन्तिम रूप से कांग्रेस की लोकतंत्रीय, धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद की नीतियों को स्वीकार किया है । निर्वाचन के पश्चात कांग्रेस ने जिस प्रकार अपने पूर्व निर्धारित दस सूत्रीय कार्यक्रम को कार्यान्वित करना आरम्भ किया है उस से जनता को कांग्रेस मे विश्वास है । अभी थोड़े दिन पूर्व नरोरा मे जो कांग्रेस का शिविर हुआ था उस में कांग्रेस ने यह घोषणा की थी कि जो समाजवादी नीतियां निर्धारित की गई है, उन का निश्चित रूप से कार्यान्वयन होगा । भारत की महान जनता को श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में और उन की नीतियों पर अटूट आस्था है । श्रीमन् मध्यावधि निर्वाचन के बाद जिस दृढ़ता के साथ हमारी कांग्रेस पार्टी ने समाजवादी नीतियों

का कार्यक्रम प्रारम्भ किया है, उस के पश्चात देश की दक्षिण-पंथी, प्रतिक्रियावादी, यथा-स्थितिवादी, अवसरवादी, सामन्तवादी और साम्प्रदायिक शक्तियों ने एकजुट हो कर इस बात का प्रयास किया है कि वे जनता के मन में जो कांग्रेस पर विश्वास है, उसको किसी तरह से डिगा सकें। मान्यवर वे समझती हैं कि यदि देश में लोकतन्त्र रहेगा तो निश्चित रूप से भारत की जनता जो समाजवाद को अन्तिम रूप से अपने दर्शन के रूप में स्वीकार कर चुकी है, कांग्रेस के पक्ष में अपना मतदान करेगी। इस से वे भयभीत हैं।

मान्यवर, उक्त शक्तियां, नीतियां और कार्यक्रमों के आधार पर जनता का मत नहीं प्राप्त कर सकती हैं, इसको वे अच्छी तरह से जानती हैं। उन शक्तियों के पास न कोई सिद्धान्त है, न कोई नीति है, न कोई आदर्श है, न कोई मूल्य है और न कोई कार्यक्रम है। उन के पास केवल चन्द बातें हैं और वे ऐसे समय पर केवल जातिवाद का धर्म का, पूंजीवाद का सहारा ले कर देश में अराजकता और हिंसा का वातावरण पैदा करना चाहती है। इन तमाम बातों के साथ अब इन्होंने एक नया प्रयास आरम्भ किया है और वह यह है कि नीतियों के आधार पर वे हमारी आलोचना करने में पूर्णतया असफल रही हैं, पूर्णतया विफल रही हैं। अब इन्होंने एक नया कार्य शुरू किया है और वह है चरित्र हनन का। मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि अभी कुछ समय पूर्व जो समाचार 'मदरलैंड' में छपा था और जिस में उन्होंने नेहरू परिवार के सम्बन्ध में समाचार प्रकाशित किया था, मान्यवर वह भारत के लोकतन्त्र के मस्तक पर एक कलंक का धब्बा है और इस प्रकार के समाचार की जितनी भी निन्दा की जाए वह कम है।

श्री जनेश्वर मिश्र (इलाहाबाद) : क्या छपा था, बताइए।

श्री चन्द्र प्रताप सिंह : श्रीमन्, प्रेस की स्वतन्त्रता के नाम पर ये जो प्रतिक्रियावादी शक्तियां हैं, ये जो चाहती हैं कि समाचारपत्रों को अधिकार दिया जाए वे इस प्रकार के समाचार अपने समाचारपत्रों में छापती हैं जिन से देश के अन्दर अराजकता और हिंसा का वातावरण पैदा हो। मेरे विचार से इस के बारे में बहुत गम्भीरतापूर्वक विचार करना होगा क्योंकि अधिकांश समाचार पत्र बड़े बड़े पूंजीपतियों के द्वारा और बड़ी-बड़ी प्रतिक्रियावादी शक्तियों के द्वारा चलाए जाते हैं, जिन में निश्चित रूप से मैं कह सकता हूं कि भारत की 55, 60 करोड़ जनता की भावनाओं, उन की आकांक्षाओं के प्रतिकूल कार्य होता है।

श्रीमन् अन्त में, मैं कुछ शब्द भूमि सुधारों के सम्बन्ध में कहना चाहता हूं। हम ने निर्णय लिया है कि हम देश के अन्दर एक वर्ग रहित समाज की रचना करना चाहते हैं। वर्ग रहित समाज की रचना के लिए हमें इस बात का निर्णय लेना होगा कि क्या इस का आधार पूंजी हो। अगर पूंजी को आधार मान कर निर्णय लेना है, तो हमें यह देखना होगा कि जो भी निर्णय हम लोग करें चाहे देहात की सीलिंग का हो या शहर की सीलिंग का हो, उस में देहात की जनता में और शहर की जनता में अन्तर नहीं करना चाहिए। जिस प्रकार से बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता आदि बड़े बड़े नगरों में इंसान रहते हैं उसी प्रकार से झुग्गी और झोंपड़ियों में भी इंसान ही रहते हैं। महलों में रहने वाले और झुग्गी झोंपड़ियों में रहने वाले इंसानों में किसी प्रकार का भेदभाव करना यह समाजवाद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। जो भेदभाव किया जा रहा है उसको मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। आप जानते हैं कि हमने लोक सभा के मध्यावधि निर्वाचनों के समय भूमि सुधार लागू करने की बात कही थी और कहा था कि यदि हम बहुमत

में आ गए तो हम दस एकड़ से अठारह एकड़ तक की भूमि का सीलिंग करेंगे। मुझे प्रसन्नता है की कई राज्य सरकारों ने हमारे दल का जो निर्णय था उसका पालन किया है और अधिकांश राज्य सरकारों ने दस एकड़ से अठारह एकड़ तक की सीलिंग भूमि पर लगा दी है और जिन राज्यों ने नहीं लगाई है वे तीव्रता के साथ इस ओर आगे कदम बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। प्रश्न यह पैदा होता है कि जो धरती किसान के पास है वही उसकी सम्पत्ती है, वही धरती उस किसान की आय का साधन है। इस यथार्थ को दृष्टि में रख कर ही कोई निर्णय आपको लेना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो मेरा यह निश्चित रूप से मत है कि किसानों के साथ निर्णय हम तभी कर सकेंगे, निष्पक्ष अपने आपको हम तभी कह सकेंगे जब हम यह देखें कि दस एकड और अठारह एकड़ भूमि जो है उसका मूल्य क्या होता है और साथ ही साथ इस पर विचार करें कि इस भूमि से आय क्या होती है। यदि हमने ऐसा किया तो हमको कहने के लिए मजबूर होना पड़ेगा कि अगर हम किसानों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करना चाहते हैं और इस देश में सचमुच मे वर्ग-हित समाज की रचना करना चाहते हैं तो देहातों और शहरों के भेदभाव को हमें समाप्त करना होगा। दस एकड से अठारह एकड पर जो सीलिंग है वही किसान की सम्पत्ती है। वही अठारह एकड किसान की आय का साधन है। जिस प्रकार से आपने यह कहा है कि भारत में किसी भी किसान परिवार के पास अठारह एकड़ भूमि से अधिक भूमि नहीं रहनी चाहिए तो उस अठारह एकड भूमि जोकि उसकी सम्पत्ति है, जो उसका मूल्य होता है उससे अधिक की सम्पत्ति भारत किसी भी परिवार के पास नहीं रहनी चाहिए। तो इस के आधार पर मै कहना चाहता हूं कि अठारह एकड़ से जो आय होती हो उससे अधिक आय भारत के किसी परिवार को नहीं होने दी जानी चाहिये फिर चाहे वह राज नेता हो, व्यापारी हो, सर्विस में हो, जीवन के किसी भी क्षेत्र में काम करता हो। यह निर्णय सभी पर हम को लागू करना चाहिए जो हमने किसान पर लागू किया है, भारत के प्रत्येक क्षेत्र में रहने वाले और काम करने वाले पर लागू करना होगा।

मैं अन्त में इतना ही कहना चाहता हूं और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों को चुनौती देना चाहता हू कि जिस प्रकार से उन्होंने लोक सभा के मध्यावधि चुनावों में एक जुट हो कर हमारे साथ शक्ति परीक्षण किया था उसी प्रकार से अब भी हम दुबारा उनसे ऐसे परीक्षण के लिए तैयार हैं, भारत की धरती पर इसके लिए हम उनकी चुनौती को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं और हमें पूर्ण विश्वास है कि भारत की महान जनता समाजवाद के बारे मे, लोकतंत्र के बारे मे, धर्म निरपेक्षता के बारे मे अपना जो अंतिम निर्णय दे चुकी है उसको वे इस निर्णय मे डिगा नहीं सकेंगे।

आप जानते ही हैं कि इधर जयपुर मे महाराजा के यहा सोना तथा जेवरात पकडे गए हैं। यह इस बात का संकेत है कि कांग्रेस पार्टी अपने सिद्धान्तों पर तथा अपने आदर्शों पर अडिग है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह केवल राजा महाराजाओं के पीछे पड़ी हूं। मैं साफ कर देना चाहता हूं कि हमारी लड़ाई राजा महाराजाओं के विरुद्ध नहीं है। हमारी पार्टी की जो लड़ाई है वह सामन्तवादी भावना के विरुद्ध है, पूंजीवादी मनोवृत्ति के विरुद्ध है। अगर राजा महाराजाओं के घरों मे सोना पकडा जा सकता है तो उसको हम पकड़ेंगे। अगर वही सोना किसी व्यापारी के घर मे पकडा जा सकता है तो वहा भी पकड़ेंगे। किसी सर्विस वाले के यहा पकडा जा सकता है तो वहा भी पकडेंगे, किसी माननीय विरोधी दल के नेता के यहा पकडा जा सकता है तो उसको भी पकड़ेंगे।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि हमारी दल की नेता तथा प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा

चौथी भारत की मानवता को शोषण से मुक्ति दिलाएंगी। उनकी दृष्टि बहुत साफ है। उसको मैं दो शब्दों मे कह देना चाहता हूं :

आसमां का खुदा कोई भी हो,
मेरी धरती का खुदा इसा है।

मेरा यह पक्का विश्वास है कि भारत के इतिहास में यह जो इंदिरा युग है यह स्वर्ण युग के नाम से स्मरण किया जाएगा।

इन शब्दों के साथ मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर जो धन्यवाद का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है उसका हार्दिक स्वागत और समर्थन करता हूं।

श्री जगन्नाथ राव जोशी (शाजापुर) : महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद के रखे गए प्रस्ताव पर चर्चा चल रही है। इस अभिभाषण मे इस साल का आशाव दी चित्र खीचा गया है। मुझे लगता है कि यह वस्तुस्थिति के विपरीत है। कुछ सदस्यो ने इस प्रस्ताव पर बोलते हुए इस बात पर बल दिया है कि तेल संकट का तथा अकाल की वजह से परिस्थिति बहुत बिगड़ गई। मैं समझता हूं कि सिर्फ तेल और अकाल की वजह से ऐसा नही हुआ है। 1969 मे आपने गरीबी हटाने का नारा दिया था। मैं जानना चाहता हूं कि क्या गरीबी हटी है? मेरे जैसे आदमी के सामने यही सवाल है।

योजनाबद्ध तरीके से इस देश के विकास की बात आपने 1952 मे करनी शुरू की थी जबकि आपने पचवर्षीय योजना बनाई थी। एक, दो, तीन योजनाये खत्म हुई और चौथी योजना शुरू होने के पहले सालाना जो योजनाए बनी 1967-68 और 1968-69, में इन सब के बावजूद क्यो स्थिति बिगडी? इस को जब तक आप नही सोचेगे इस पर आप जब तक विचार नही करेंगे, इसकी गहराई में आप जब तक नही जाएगे तब तक सिर्फ तेल संकट और अकाल कह कर टाल देना न सिर्फ दुनिया को बल्कि खुद को भी धोखा देना है, देश को भी धोखा देना है। पाचवी योजना में यह कहा गया था कि नीचे के स्तर के तीस प्रतिशत लोगो को हम ऊपर लाएगे कंगाली की रेखा के नीचे जो 22 करोड जनता है उसको हम ऊपर उठायेंगे। लेकिन ऐसा कुछ हुआ क्या? हुआ क्या है? 22 करोड की जो तादाद थी वह 27 करोड हो गई है। तीस प्रतिशत से बढ कर वह करीब पचास प्रतिशत हो गई है। यत्नेकृते यदि न सिद्धयते कोत्र दोषः। प्रयत्न करने के बाद भी फल मिलना नहीं है तो क्यो? इसको आप सोचेगें या नही सोचेगें? आपने 1969 मे चौथी योजना प्रारम्भ की। वह योजना समाप्त भी हुई। जितना पैसा खर्च करना था आपने किया। किन्तु जो प्रमुख टारगेट्स थे, जिस को लक्ष्य कहते हैं, वे थे, वे पचास प्रतिशत मे अधिक पूरे नही हुए। इसलिए जब पाचवी योजना के बारे मे कुछ टारगेट्स दिए जाने लगे तो मैंने कमेटी मे यह पूछा था कि चौथी योजना के लक्ष्य पूरे क्यो नही हुए, यह आप हमे समझायेंगे? इसको अगर समझा दिया जाएगा तभी आगे चल कर आपके जो लक्ष्य है ये प्राप्त हो सकते हैं इसको हम मान लेंगे। बुनियादी जो गलती हुई है उसका आज तक भी आप सुधारने के लिए तैयार नही है। बजाय उसको सुधारने के मजाक उड़ाई जाती है। कभी कुछ नाम ले कर टाला जाता है जैसे आजकल सभी के दिमागो पर माना जयप्रकाश जी का आन्दोलन सवार है। कुछ भी बात हुई, जे पी को बीच मे घसीट दिया जाता है। प्रधान मंत्री से ले कर नीचे तक के लोग कहते है कि परिस्थितियो का अनुचित लाभ विरोधी उठाते हैं। गुजरात का आप लें। भावनगर जी बैठे हुए हैं। वहा पर कोई जे पी नही था। विरोधी दल वाले नही थे। वह जन आन्दोलन था, स्वयं स्फूर्त था। वहीं तो उन्होने आपको मजबूर नही किया लेकिन आपका विधान सभा भंग करनी पड़ी। वहां तो जे पी नही गया, कोई विरोधी राजनीतिक दल नहीं गया।

जन आन्दोलन खड़ा क्यों होता है ? परिस्थिति ऐसी क्यों होती है कि वह खड़ा हो ? परिस्थिति काबू से बाहर जब चली जाती है तो जनता तंग आ कर उसके विरुद्ध आन्दोलन करने को विवश क्यों होती है ? मैं मानता हूं कि आन्दोलन नहीं होना चाहिए । लेकिन समस्या का हल कैसे होगा यह आप मुझे समझाएं ।

जब मैं लोक सभा में आया तब यहां पर घी साढ़े बारह रुपये किलो मिलता था । फिर साढ़े उन्नीस हो गया । फिर इक्कीस हुआ और अब पच्चीस रुपये किलो है । लोक सभा के सदस्यों की तनख्वाह तो उतनी ही है जितनी 1954 में थी यानी पांच सौ । बीच में भत्ता 31 से बढ़ कर 51 हुआ । लेकिन दाम 12 के बजाय 25 घी के हो गए यानी दुगुने हो गए । 1954 के मुकाबले मे पाच गुना हो गए । जनता की आमदनी बढ़ी नहीं । इसका मतलब हुआ जो रीयल इनकम है इरोडिड । भले ही हमे पाच सौ रुपये मिलें लेकिन व कुछ काम के नहीं । दाम क्यों बढ़ रहे हैं ? आप यह न कहिये कि दुनिया मे बढ़ रहे हैं । घी तो हिन्दुस्तान के अन्दर पैदा होता होता है । दुनिया मे महंगाई की बात तो हम तब कर सकते है जब हमें बाहर से कोई मशीन मंगानी हो और उसकी कीमत ज्यादा हो । तब वह बात समझ मे आ सकती है । घी पैदा करने वाले सारे प्राकृतिक साधन—खाद, भैंस और घास आदि—यहां मौजूद हैं । इस प्रकार के सभी प्राकृतिक साधनों के आधार पर हम लोगों ने यहां एक सल्फ-रेलायट इकानमी नहीं बनाई है । इस को हम नहीं मानते हैं और किसी न किसी को दोष देते चले जाते हैं । इस लिए आन्दोलन-कारियों को दोष देना खुद को धोखा देना तो है ही, लेकिन वह सही रास्ते पर न आना भी है ।

आन्दोलन के सिलसिले में जो बात निकली है, वे हैं महंगाई, बेकारी, भ्रष्टाचार चुनाव प्रणाली में परिवर्तन, शिक्षा पद्धति में सुधार और सामाजिक न्याय । बातें बहुत की जाती हैं । किन्तु नरोरा कैम्प मे भी आप को दोहराना पड़ा—13-सूत्री कार्य-क्रम मे कहना पड़ा कि हरिजनों और पिछड़े हुए लोगों के लिए घर बनवाने के लिए हम जगह देंगे—इनएलियनेबल राइट देंगे । यदि आप वास्तव मे 1947 से लेकर अब तक इस दिशा मे आगे बढ़ते, तो हरिजनों और पिछड़े हुए लोगो के लिए ताज महल खड़े कर देते । लेकिन आप ने इधर ध्यान नही दिया ।

इतने सालों के बाद, सीमेंट के महंगा होने के बाद, वर्क्स एंड हाउसिंग मिनिस्टर ने कहा है कि मिट्टी का मकान बढ़िया रहता है । किस ने कहा है कि नहीं रहता है ? मकान बनाने के लिए मिट्टी, लकडी, पत्थर, और उन सबको मिलाकर बांधने के लिए हाथ मौजूद हैं किन्तु मकान नही हैं । क्यों नहीं है ? आज बम्बई मे 42 मन्जिल की इमारतें बन रही हैं । गगन को छूने वाली इमारत खड़ी करने वाला खुद बेघर है । व्हाट एन आयरनी आफ फेट । अंग्रेजी मे कहावत है, "चैरिटी बिगिन्ज ऐट होम" । क्या यह चैरिटी है ? जो और लोगो के वे मकान खड़े करता है, उस के अपने लिए मकान नही है । वह फुटपाथ पर सोता है । वह झुग्गी-झोंपड़ी मे रहता है । यह खाई लगातार बढ़ती जा रही है । क्या यह राष्ट्र रोशनरोज का काम है ? आप जरा गहराई मे जा कर समझ लीजिए ।

बम्बई में ओबराय-शरटन होटल और ताज महल होटल खड़े हुए हैं । इस विलासिता मे मग्न होने लायक स्थिति आप ने देश में पैदा की है । आप ने पार्टी का अर्थ यह बताया है कि ग्रामीण क्षेत्र में जिस की आय 15 रुपये और उस से कम हो, और शहर में उस की आय 30 रुपये और उस से कम हो वह गरीब समझा जाये । किन्तु आप

जो बड़े-बड़े होटल खड़े कर रहे हैं, ये किन के लिए ? आप के राज्य में फूड का माल-डिस्ट्रिब्यूशन ही नहीं है, मनी का माल-डिस्ट्रिब्यूशन भी है । यह जो कानसेन्ट्रेशन आफ मनी हो रहा है उस का डिफ्यूजन कैसे होगा कौन करेगा ? ऐसे होटल चलते हैं, इस का मतलब ही यही है कि आप ने ऐसी क्लास तैयार की है जो उन होटलों में जाती है, खाती,पीती है, नाचती है और कैबरे देखती है । "राजा कालस्य कारण ।'

आप ने दिशा नहीं दी है । आप के सामने यह लक्ष्य हो नहीं था कि आखिर हम को जाना कहां है, पहुंचना कहां है । यदि यहां समृद्धि पैदा होती है तो उस का वितरण ठीक ढंग से कैसे हो ? आम आदमी तक समृद्धि कैसे पहुंचेगी, इस को देखने वाला कौन है ? इस लिए सिर्फ तेल संकट का नाम लेने से काम नहीं चलेगा । आप लगातार गलत दिशा को ले कर चल रहे हैं । आप इस बारे में छान-बीन करने की कोशिश करें । अभी एक मित्र ने कहा कि यह होगा वह होगा । ऐसी बातें हमेशा की जाती रही हैं लेकिन होता कुछ नहीं है ।

तीसरी पंच-वर्षीय योजना के काल में यह देखने के लिए महालनवीस कमेटी नियुक्त की गई कि देश की जो 40 प्रतिशत आमदनी बढ़ी है, उसका वितरण कैसे हुआ । उस कमेटी ने कुछ सिफारिशें भी की । उस कमेटी की फाइंडिंग्ज पर क्या कार्यवाही हुई यह देखने के लिए क्या एक नई कमेटी नियुक्त करें ? क्योंकि उसके बाद भी बदला कुछ नहीं है । आज जो परिस्थिति पैदा हुई है उसका कारण केवल तेल संकट वगैरह नहीं है । हमने बुनियादी गलती की है ।

अभी मेरे मित्र गांव की बात कह रहे थे । गांव इस देश का पांव है । यदि पांव लंगड़ा है तो तो देश लंगड़ा है । यही बुनियादी बात हम भूल गये और यही बुनियादी गलती हम ने की गांधीजी ने बहुत पहले 'बैक टु विलेजिज की बात कही थी । उन्होंने यह क्यों कहा ?— क्योंकि उसी समय लोगों का शहरों की ओर जाना बढ़ रहा था । विनोबा जी ने ग्राम स्वावलम्बन ग्राम स्वराज्य और शासन-रहित समाज की बात कही है । उन्होंने यह सब गांव की ओर ध्यान देने के लिये कहा है । लेकिन हमने कितना ध्यान दिया है ? आज भी अरबनाइजेशन की एक्सेलिरेटिड प्रासेस-द्रुत प्रक्रिया—के बावजूद हमारी केवल 18 प्रतिशत जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में रहती है जब कि 82 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में है । हमें यह भी नहीं भूलना है कि हमारी नेशनल इनकम का 44 प्रतिशत गांवों से आता है ।

इतना होने के बाद भी विलेजिज में क्या हुआ ? जब हम ने बिजली के बलबूते गांवों में उद्योग खड़े किये तो प्लानिंग कमीशन में बैठे लोग कहते हैं कि अब पावर की शार्टेज है, इसलिए रूरल इलेक्ट्रिफिकेशन का प्रोग्राम छोड़ देना चाहिए, उस को आगे नहीं बढ़ाना चाहिए । यानि जब गांवों के सुधार गांवों में काम उपलब्ध करने और गांवों की बेकारी हटाने का विचार आया तो पावर शार्टेज आ गया ।

आज भी हमारे देश में जो पावर जेनेरेट होती है, उस का 93 प्रतिशत शहरों में इस्तेमाल किया जाता है और सिर्फ 7 प्रतिशत गांवों में जाता है । उसमें स भी किसानों को अपने पम्पों के लिये कितनी बिजली मिलती है ? लोगों को इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड के सामने प्रदर्शन करके बिजली के लिए कोशिश करनी पड़ती है । मूल गांव है, लेकिन उस को हमने अनुकरण छोड़ दिया । हम लोगों ने दूसरों का अनुकरण करके एक इमारत खड़ी की, एक ढांचा खड़ा किया, जिस की वजह से गांव वाले गांवों में रह गये ।

आज हम कहते हैं कि गांव और शहर का अन्तर मिटना चाहिए । क्या वह मिट गया है ? है ? नहीं ! आप की दृष्टि अलग है ।

आप एयर-कन्डीशनन्ड बिल्डिंग बनायेंगे, जम्बों जेट लायेंगे और बड़े बड़े होटल बनायेंगें, जिन का उपयोग केवल मुट्ठी भर लोगों के लिये है। आम आदमी के उपयोग के लिये जो चीजें या काम हैं, अगर हम उन की तरफ ध्यान देकर उन मे पूंजी लगाते, तो यह स्थिति न पैदा होती।

पहली प्लान से ही यह गड़बड़ प्रारम्भ हुई। पहली प्लान समाप्त होने के पूर्व 33 लाख बेकार थे और उस के समाप्त होने पर 53 लाख लोग बेकार हो गये। दूसरी योजना के बाद 90 लाख बेकार हो गये। तब कहा गया कि आबादी बढ़ रही है। आबादी का सवाल अलग रखिये। दूसरी पंच-वर्षीय योजना खत्म होते ही जो बेकारों की तादाद बाजार मे खड़ी थी, वे सब 1947 से पहले पैदा हुए। आप ने जो योजना बनाई, वह उन की बेकारी की कल्पना कर के, उन की बेकारी को दूर करने की दृष्टि से नहीं बनाई। आप ने जो योजना बनाई, उसमें हैवी इंडस्ट्रीज स्थापित की गई, बड़े बड़े स्टील के कारखाने खड़े किये गये और उनमें बहुत पैसा लगाया गया। किन्तु जब तक हम विकेन्द्रित रूप में, गांवों में ले जा कर, इंडस्ट्री खड़ी नहीं करते तब तक यह समस्या हल नहीं होने वाली है। बेसिक गलती ही यही हुई है। आज न इंडस्ट्रीज का प्रापर डिस्ट्रीब्यूशन है और न पापुलेशन का।

आज लोग फुटपाथ पर क्यों सोते हैं?—इसलिये कि उनको मालूम नहीं कि कहां जायें। जिस तरह परवाना शमा पर जाता है उसी तरह लोग शहरों की तरफ जाते हैं और "शहर और सपना" देख कर ह्यूम पाइप मे सोते हैं। क्या हम को शर्म नहीं आती है? क्या यह कोई तरीका है? भारतीय संस्कृति के बारे में बहुत से लोग बहुत बोलते है। किन्तु भारत में व्यक्ति को गृहस्थ माना गया है अर्थात् गृह में रहने वाला। केवल बन्दर ही बेघर रहता है। इस राज्य में बेघर व्यक्तियों की संख्या बढ़ गई है।

श्री मधु लिमये (बांका): सरकार याद दिलाती है कि हम कहां से पैदा हुये।

श्री जगन्नाथ राव जोशी: हमारे शास्त्रकारों ने कहा गृहंतु "गृहिणी हीनम्"। गृह नहीं होगा उन्होंने यह कल्पना नहीं की। किन्तु आज इस राज्य में गृहिणी है मगर गृह नहीं है। इस स्थिति का कारण यह है कि हमें काम और उद्योगों को विकेन्द्रित रूप मे गांवों में ले जाना चाहिए था लेकिन आज तक हमने ऐसा नहीं किया है।

नेहरूजी ने 1954 में कहा था कि हमारी पहली योजना समाप्त होने दीजिए इतना ही नहीं कि हम अन्न के मामले में आत्म-निर्भर बनेंगें बल्कि हम अन्न का निर्यात भी करेंगें। आज हम 1975 में आये हैं। जिस देश में 70 प्रतिशत जनता जमीन पर निर्भर हैं, वह देश आत्म-निर्भर नहीं है क्या यह शर्म की बात नहीं हैं? क्या यह इतिहास में स्वर्णाक्षरों मे लिखने लायक है? हर बार जब आप कहते हैं कि उत्पादन बढ़ाओ कहां बढेगा उत्पादन? जमीन मे ही बढ़ेगा? आप के ही प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने 1965 में क्या नारा दिया था—जय किसान। क्यों नारा दिया था जय किसान? इसलिये नारा दिया था कि अमेरीका पर जो हमेशा आप लोग भरोसा करते हैं अमरीका ने उन दिनों में गेहूं का वादा तोड़ दिया था। इसलिये शास्त्री जी ने नारा लगाया कि भीख मत मांगो। यदि आहार की कमी है तो हम भोजन नहीं करेंगे एक वक्त बचत करेंगे भीख नहीं मांगेगे। किन्तु जय किसान का नारा देकर भी किसान की तरफ देखा? अंग्रेज के जमाने में 18 प्रतिशत जमीन पानी से भीगती थी आज 23 प्रतिशत है। 27 साल मे यही हमारी परफार्मेंस है? पानी का प्रयोग करने की परम्परा तो भारत की दुनिया में सबसे पुरानी है। स्वामी स्वर्ग गंगा जो सीधी

स्वर्ग से निकली हिमालय पर गिरी वह कहीं इधर उधर न जाय इसलिये जन्हु को जांघ को तोडकर भागीरथ उसको भूमि पर लाये उससे साठ लाख सगर के पुत्रों का उद्धार हुआ ? यानी नदी के पानी के प्रयोग की परम्परा इतनी पुरानी है। किन्तु सकप्पा हुए रहे हैं । कृष्णा गोदावरी का झगडा चालू है। नर्मदा का झगडा चालू है कावेरी का झगडा चालू है सोन का झगडा चालू है व्यास का झगडा चालू है । नदी के पानी का उपयोग कौन करेगा ? यह जिम्मेदारी किस की है ? भारत पाकिस्तान के बटवारे मे तीन नदिया सीधे पाकिस्तान को चली गई झेलम सिन्ध और चुनाब । रावी सतलज और व्यास तो हमारी थी । 65 तक उन्हें पानी देना था । बाद मे बाध बनवा कर पानी का प्रयोग हमे करना था। कहा हुआ ? एक सतलज पर भाखडा बना। रावी पर क्या है ? व्यास पर क्या है ? व्यास के पानी को रोक कर टनेल से भाखडा जलाशय को पानी देना था ताकि बिजली मे कटौती न हो । यह कल्पना थी । वह कहा गई ? हर बात के लिये इस किस और को क्यो दें ? साधन अपने पास न हों तो यह बात मैं समझ सकता हूं । भगवान ने प्राकृतिक साधन सम्पत्ति हम को इतनी दी है कि फिर भी कोई कमी नहीं । जिसको हम हाइडिल पावर कहते हैं हाइडिल पावर का जो लक्ष्य है उसकी 17 प्रतिशत क्षमता का हमने उपयोग किया, 83 परसेंट लाइ अनटेप्ड ? और यहा हम पावर कटौती करते फिरते हैं ।

आज कोयले की कमी है । सरकारी किताब जो छपी है उसी मे कहा गया है कि 20 हजार करोड टन कोयला है । कोयले का उत्पादन 8 करोड 70 लाख टन तक है और चौथी पंच वर्षीय योजना मे 12 करोड टन करने का लक्ष्य है । मंत्री महोदय यहा बैठे हुये हैं। हमारी समझ मे यह नहीं आता है कि इतना कोयला होने के बाद भी एक भी थर्मल प्लांट इनका पूरा क्यो नहीं चल रहा है ? हमने पूछा कि यह 40 प्रतिशत कैपेसिटी से ज्यादा काम ही नहीं करते, यानी अनयूटिलाइज्ड कपेसिटी जो है इसके लिये जिम्मेदार कौन है ? राइट रीएक्शनरी जिम्मेदार है ? या जे पी जिम्मेदार है ?

स्टील है, एक लाख टन की स्टील की कैपेसिटी होने के बाद स्टील का उत्पादन कितना है ? 51 प्रतिशत । उसका मतलब यही निकला कि "मनी हुज बीन ब्लाकड विदाउट एनी रिटर्न।" ।

फर्टिलाइजर फैक्ट्रियां हैं। उनमें 40 प्रतिशत कपेसिटी अनयूटिलाइज्ड है । थर्मल प्लाट की पावर जो है उसमे 60 प्रतिशत अनयूटिलाइज्ड है । स्टील मे 50 प्रतिशत अनयूटिलाइज्ड है । आखिर यह जो है, यह अव्यवस्था है । और दूसरा कुछ नही है ।

जापान का हम नाम लेते हैं। पिछले साल 8 करोड टन का अपना लक्ष्य उन्होने पूरा किया हालांकि कोई साधन उनके पास नही है । हमारे पास मैंगनीज और है आयरन ओर है, हर चीज हिन्दुस्तान के अन्दर होने के बाद भी हम स्टील प्रोडक्शन मे आगे क्यो नहीं हैं ? अपने लक्ष्य के अनुसार हम प्रोडक्शन क्यों नही करते हैं दूसरो को दोष देना ठीक नही है। यह चीप क्यो कि होती हैं ।

खेती के बारे में कहा कि 18 एकड की सीलिंग हुगी । कुछ भी करो मगर कुछ निश्चित तो करो ऐग्रीकल्चर के बारे मे क्या कोई एक पैटर्न आप ने निश्चित किया है कि कितना रहे ?

Whether it is through intensive farming, wheths it should be a family holding.

क्या निश्चित किया है ? हर जगह अपवाद, हर जगह अपवाद, कहीं वह रहा कहीं वह रहा

इतने साल होने के बाद भी लैंड सीलिंग अभी पूरी नहीं हुई । क्यों नहीं हुई ? करने वाले तो आप हैं किसान की जमीन तो छोटी कर दी और उस के सामने बड़ा ट्रैक्टर ले जा कर खड़ा कर दिया । या तो ट्रक्टर भी मिनि बनाओ कि जो दस एकड़ में काम करे । कुछ हिसाब से बनाओ कुछ पैटर्न रखो । हैं

वही बात उद्योग की भी है । ये आप के सारे दोस्त यहां बड़े हैं, वे आर फार पब्लिक सेक्टर, यानी शुरू से ऐसा तय किए हुए हैं कि जैसे पब्लिक सेक्टर प्राइवेट सेक्टर दुश्मन जैसे झगड़ा कर रहे हों । आखिर जनता के राज्य का मतलब क्या है ? जनता का तन मन धन तीनों शक्ति उस की लगनी चाहिए न । जो विद्या-विभूषित है वह अपनी विद्या देश के लिए न लगाए, जिन के पास धन हैं वह अपना धन देश के लिए न लगाएं यानी 'इट इज नाट एक्सेप्शन आफ सोशलो कैपिटालिस्ट्स,' आप के राज में कोई मन्कार नहीं हैं, आप के राज्य में

People don't exploit to earn but entertain to earn.

वे जो सारे सिनेमा स्टार्स हैं

they never exploit anybody but they accumulate monedy.

वह एक आदेश जैसे निकला हैं, . . . जो मिड डे मिल के लिए एक करोड़ का उन्होंने बनाया कोई हैं दूसरा ? यानी खुद गरीबी में से जो ऊपर आए वे नेचर एक्सप्लायट । वे आप को एक्सप्लायटेशन की लाइन में नहो आते :

They entertain people and accumulate money.

पैसा जमा होता हैं, ब्लैक मनी जमा होता हैं । मैं जानता हूं कि 15 लाख से कम में काम नहीं करते और रिसीट एक लाख से ज्यादा की नहीं देते ।

SHRI K. LAKKAPPA: (Tumkur): You are supporting that?

SHRI JAGANNATHROA JOSHI: I am not supporting that.

सारे ऐसे लोगों को बुला कर क्रिकट का मैच करवाते हो और मिनिस्टर फंड के लिए पैसा इकट्ठा करते हो, शर्म नही आती, जमुना में डूब मरना चाहिये

श्री मधु लिमये : प्राइम मिनिस्ट फंड का कोई एकांउंट पिछले 27 वर्षों से प्रकाशित नहीं हुआ ।

श्री जगन्नाथ राव जोशी :

The money has got a tendency to accumulate. It is not only through exploitation but, through entertainment also, money is being exploited.

उस का क्या कारण है ? यज्ञ दान और तप की जो कल्पना समाज में थी व्यक्तिगत, सामाजिक और भौतिक वह कल्पना चली गई । संस्कार हुआ नही किसी को । कोई खुद का पैसा देता नही, खुद का पैसा लगाता नही, धन इकट्ठा करता है । यह मैं इसलिए बताता हूं कि राजा कालस्य कारणम् । आप लोग दिशा देते हैं । आप लोगों ने दिशा नही दी । इसलिए ऐसे तरीकों से आज वह चल रहे है ।

एक प्राइवेट सेक्टर है, एक पब्लिक सेक्टर है, एक ज्वाइंट सेक्टर है । जब मारुति लिमिटेड की बात आती है तो कोई बोलता नही । सब चुप । क्यों ? यानी प्राइवेट सेक्टर खराब है तो मारुति लिमिटेड भी खराब है, प्राइवेट सेक्टर अच्छा है तो मारुति लिमिटेड भी अच्छा है । वही उस का डिमार्केशन करो, उस का क्षेत्र निश्चित करो । वैसे ही पावर लूम, हैंडलूम, टेक्सटाइल सब चालू है । इस इन्डस्ट्री में भी इतनी अराजकता है । उद्योग की कल्पना में अराजकता है, कृषि की कल्पना में अराजकता है । पानी है उस का प्रयोग नहीं ।

बिजली सप्लाई होती नही, इडस्ट्री ठीक चलती नही । नौ प्रतिशत जो ग्रोथ रेट था वह शिल तक आकर पहुच गया । और यह सारा अकाल है, तेल का सकट है, उसी के मत्थे मढ़ कर दूर होने की कोशिश करेंगे तो हम खुद को भी धोखा देंगे और दूसरों को भी धोखा देंगे । जब आप एकोनामिक डिसिप्लिन की बात करते हैं तो

चौथी योजना में कोई सहायता बाहर से मिल नही रही थी तो आप ने कहा कि कम से कम सहायता हम लेंगे लेकिन चौथी योजना मे सहायता कितनी बढ़ गई हैं ? ओवर ड्राफ्ट देखे, पहले प्लान मे जितनी ओवर ड्राफ्ट थी, दूसरे प्लान मे उस से ज्यादा हो गई । 70–71 में और ज्यादा ओवर ड्राफ्ट हुई । यह ओवर ड्राफ्ट कौन बन्द करेगा ? आप लोग नही कर सकते ।

आज केन्द्रीय कर्मचारियों को डी ए देने के लिए पैसा नही है और मत्रियों की भारी मौज उड़ा रहे हैं । बीच में आप ने एकदम नायक साहब को हटा दिया । नायक साहब को जब मालूम हुआ कि मै हटूगा उन्होंने दस मत्रियों की अपनी फौज और बढ़ाई । 21 से 31 हो गए । फिर भी वह बेचारे तो चले गए । अब आज 26 आ गए यह कहते हैं कि और दस बढ़ाएगे, 36 हो जाएगे । कामराज जी मद्रास जैसी बड़ी स्टेट में आठ मत्रियो को ले कर काम करते थ, वह भी काग्रेस के ही थे । इतना ही नही डिफेक्शन कमेटी ने कुछ तय किया था, उसमें मधु लिमये जी भी थे, कि केन्द्र में 11 प्रतिशत और राज्यो मे 10 प्रतिशत मत्री रहे । वह डिफेक्शन कमेटी का तय किया हुआ क्या हुआ क्या हुआ ? यानी जो भी निर्णय आप लेते है उस पर अमल ही नही करते हैं तो आखिर देश क अदर अराजकता नही आएगी तो क्या आएगी ? केवल बोलने से तो काम नही चलेगा । एकानोमिक डिसिप्लिन, एकोनोमिक डिसिप्लिन बालने रहने से तो एकोनामिक डिसिप्लिन नही हो जायगी । डिसिप्लिन शुड बी ऐट आल लेवल्स ।

आज शेख अब्दुल्ला के साथ बात हो रही है । नायक को जब निकाला किसी ने पूछा नही कि क्यों निकाला ? शकर राव को क्यों लाए ? यह जो खेल आप लोग करते हैं यह क्यों करते हैं ? जहाज वाले को निकाला रेल में ले आए, रेल वाले को निकाला जहाज में ले आए, यानी दोनों को इतना ही समझते हैं कि ट्रेन जमीन पर चलती है और जहाज पानी पर चलता है, और कुछ नही समझते ? यह अदल बदल आप लोग क्यो करते रहते हैं ? क्या इस का उपयोग है ? आखिर डिसिप्लिन का मतलब यह हुआ है कि हर क्षेत्र मे डिसिप्लिन हो । हर एक क्षेत्र मे जैसे डिसिप्लिन चाहिए वैसे ही राजनैतिक क्षेत्र में भी डिसिप्लिन चाहिए । कोई मत्री बेचारे कोयम्बटूर जा रहे थे, उन को कहा घर जाओ, कोयम्बटूर मत जाओ, घर जाओ । इस तरह कोई मत्री काम करेगा ? तुम्हारा आदमी जो है दि बेस्ट इन व्हिच यू डील, दि स्टाइल, कुछ तो होना चाहिए । हमारा यह भी कहना नही है कि शेख अब्दुल्ला को मत बैठाओ । चाहे जिस को बैठाओ । परन्तु कर क्या रहे हो बताओ तो सही । वह लगातार स्टेटमेंट देते हैं, कहते है कि 1953 के बाद जो जो चीज हुई है, हमारी ख्वाहिश होगी तो मानेंगे नही तो नही मानेंगे । इस का मतलब क्या निकलता है ? वह सारा कानून हम लोगो ने पार्लियामेंट मे पास किया है ऐड ही इज डिफाइग दि अथारिटी आफ पार्लियामेंट । यह सवाल व्यक्ति का नही है । यह शमीम के नाराज होने का सवाल नही है । वहा कोई भी हो, क्या हम यह दे देंगे उसको चाहे जो करने के लिए ? इसलिए मैं ने पूछा कि आप के सामने कोई चित्र भी है या नही सारे देश का ? आज भी शेख अब्दुल्ला पूछते हैं कि केन्द्र को ताकत कहा से मिले, वह स्टेटस से मिले । यह फेडरेशन मे है । मगर हमारी सारी जो कास्टीट्यूशन है उस का जो भाव है वह तो फेडरेशन का नही है । फेडरेशन का बिल्कुल नही है । यदि वैसा होता तो रेजिड्यूअरी पावर केन्द्र के हाथ में नही रहती । आज किसी

को भी हटा कर राष्ट्रपति वहां बैठा दें यह नहीं होता। आखिर यहां देश में यूनिटरी सिस्टम हम चलाना चाहते हैं।

राष्ट्रपति महोदय ने कहा था —

"He will shortly make a statement in this regard."

वह 24 तारीख को बैठने जा रहे हैं, बतलाइये आप का स्टेटमेंट कहां है? मैंने तीन-तीन बार सलाहकार समिति में इस सवाल को पूछा कि वे स्टेटमेंट देते जा रहे हैं, तुम बोलते क्यों नहीं हो, हम को सही स्थिति बतलाओ, परन्तु कोई जवाब नहीं। लोग हम को पूछने हैं, वे कहने लगे हैं कि तुम झूठ बोलने हो, तुम पार्लियामेंट में हो, तुम को मालूम नहीं है, ऐसा कैसे हो सकता है, तुम को जरूर मालूम होगा।

I strongly protest against the style of functioning

यह डेमोक्रेटिक सरकार है। हम भ्रष्टाचार बेकारी, जनता की समस्याओं की बातें कर हैं। चुनाव प्रणाली की बात करते हैं—आप ने अध्यादेश निकाला—अनाप-शनाप जो पैसा खर्च होता है, उस पर रोक लगाने के लिये, लेकिन आप ने अध्यादेश निकाल कर सब पर पानी फेर दिया। 180 लोगों की पिटीशन खुल जाती तो इनका जा ; 6 साल के लिये चुनाव नहीं लड़ सकते थे तो न लड़ते—लेकिन आप ने अध्यादेश निकाल कर ठीक नही किया

श्री मधु लिमये : क्या बात कर रहे हैं—इंदिरा गांधी के खिलाफ पेटीशन है और आप कहते हैं कि कुर्सी छोड़ दो।

श्री जगन्नाथ राव जोशी: शंकरदयाल सिंह जी यहां बैठे है—1965 की बात है—क्या हिन्दी को जो स्थान मिलना चाहिए था, वह मिला? क्या शिक्षा दें, कौनसी शिक्षा दें किस माध्यम से शिक्षा दें—यह आप आज तक तय नहीं कर पाये। मेरी मातृभाषा कन्नड़ है, लेकिन मैं हिन्दी बोलता हूं। जब 1930-31 में हम प्रभात-फेरी पर आते थे तो गाते थे—विश्व विजयी तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊंचा रहे हमारा—उस समय हिन्दी के साथ जो लगाव था, वह सब आप ने तोड़ दिया। उस समय हिन्दी भाषा बोलना देशभक्ति समझी जाती थी, खद्दर पहनना देश भक्ति समझी जाती थी, लेकिन आप ने सब तोड़ दिया। हिन्दी के लिये कौन वातावरण पैदा करेगा, दुनिया में जा कर हिन्दी कौन बुलायेगा, दुनिया में कौन प्रचार करेगा? इसलिये मूल भूत शिक्षा पद्धति में परिवर्तन होना चाहिये जिस से कि आदमी सुशिक्षित हो, सक्षम हो और कोई भी कार्य करने के लिये तैयार हो, शिक्षा में ऐसा परिवर्तन कौन करेगा? चुनाव प्रणाली के द्वारा इमानदार, कार्यक्षम आदमी जनता का प्रतिनिधि बन कर आगे चुन कर आये—इस काम को कौन करेगा?

आज जो भ्रष्टाचार व्याप्त है—उस के छिपाने की कोशिश क्यों हो रही है? संथानम कमेटी ने कहा—यदि 10 विधायक भी बतायें तो जांच हो और यदि प्राइमाफेसी केस बने तो कार्यवाही हो, सजा हो, लेकिन आप तो भ्रष्टाचार को छिपाना चाहते है। मैं पूछता हूं भ्रष्टाचार को छिपाने से क्या लाभ है? यहां पर कोई भी दल आये—चाहे मेरा ही दल आये, कोई भी आदमी गगन से उतर कर नही आता है—

We come from the same stock of the society.

जिस बुराई से समाज पीड़ित हो, बीमार हो, यह चीज हम पर भी लागू होती है, उसे डाक्टर को दिखलाना पड़ता है, उसे छिपाते क्यों हो, डाक्टर से छिपाना क्यों चाहते हो?

आप जे०पी० के आन्दोलन को राइट-रिएक्शनरी बोलते हो, फासिज्म बोलते हो, लेकिन फासिज्म का अर्थ भी जानते हो, जिस के पास ताकत है वही फासिस्ट बन सकता है, दूसरा नहीं बन सकता है । कल जा कर, मैंने अपने दूध वाले से कहा—अरे, तुम अपना दूध … किया दो । वह कहने लगा—नहीं …, … लेना हो तो लो । मैं उस के साथ जबरदस्ती नहीं कर सकता । आप किसान को कहते हैं कि अनाज रखना नहीं चाहिये, अगर रखता है तो कहते हैं कि पकड़ लो । आप के हाथ मे ताकत है, आप जबरदस्ती कर सकते हैं । यही कारण है—आज कपास की कीमत कम है, लेकिन कपड़े की कीमत नहीं घटी, गन्ने की कीमत कम है किसान को उचित दाम नहीं मिलता, लेकिन चीनी की कीमत घटती नहीं है । मूंगफली की कीमत कम मिलती है, लेकिन वनस्पति की कीमत कम नहीं है, उस पर से तो आपने नियन्त्रण ही हटा दिया है, चाहे जिस भाव में बेचो । इस लिये आज जो इन्फलेशन बढ़ा है, मुद्रा-स्फिति बढ़ी है, उस के हम जिम्मेदार नहीं हैं, आप लोग जिम्मेदार हैं । जब आर्थिक अनुशासन का पालन होगा, राजनीतिक अनुशासन का पालन होगा—तब काम होगा । बीच-बीच मे एकदम से किसी लहर के आ जाने से काम नहीं चलेगा । जैसा एक मन्त्री ने कहा—दुनिया वाले, आते हैं, फला यह करता है, फला वह है, मैं तो इन दुनियावालो मे, अमरीका, रूस, चीन—इन मे कोई भेद करने को तैयार नहीं हू । अमरीका ने कई बार आप को धोखा दिया है । पिछली बार स्वर्ण सिंह जी को अमरीका ने कहा था कि आगे से शस्त्र नहीं दिये जायगे, लेकिन बाद मे पता चला कि शस्त्र आ रहे हैं

They are in the pipeline.

इस तरह से कितनी बार अमरीका ने धोखा दिया, लेकिन हम विश्वास करते चले आ रहे हैं ।

श्री मधु लिमये : पाइप लाइन लम्बी है ।

श्री जगन्नाथराव जोशी : राष्ट्रपति महोदय ने काश्मीर के बारे में कहा है

We wish the people of Jammu and Kashmir speedy progress as an integral part of the nation.

लेकिन एक-तिहाई जो काश्मीर चला गया, उस का क्या हुआ ? क्या उस को भूल गये ? हमारे देश पर आक्रमण कर के गैर-कानूनी तौर पर काश्मीर के एक तिहाई भाग पर पाकिस्तान कब्जा कर के बैठ गया तो बैठ गया—आप ने उस के लिये क्या किया । हिन्दुस्तान का विभाजन कर के ये दुनिया की बड़ी बड़ी ताकते आज तक मजे उड़ा रही है—यदि इस तरह की नीति हम लोग अपनायेंगे तो उस का क्या परिणाम निकलेगा ?

इस लिये, उपाध्यक्ष महोदय, मैं अधिक समय नहीं लेना चाहता, जब तक आर्थिक अनुशासन नहीं करेंगे और उस पर सही तरह से अमल नहीं करेंगे तब तक स्थिति मे परिवर्तन नहीं आयेगा, आज की परिस्थिति तो उस परिस्थिति से मेल नहीं खाती है ।

इन शब्दों के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं ।

श्री शंकर दयाल सिंह (चतरा) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण का स्वागत करते हुए, यह चाहता हूं कि:—

MR DEPUTY-SPEAKER: You can resume your speech on Monday.

---

15 30 hrs

Committee on private Members' Bill and Resolutions Fiteenth Report

MR. DEPUTY-SPEAKER: We now take up Private Members' Business.